Fourteenth Loksabha

Session : 7
Date : 20-03-2006

Participants : Shiwankar Shri Maha Deo Rao

an>

Title : Issue regarding problems being faced by the people engaged in poultry business due to recent spread of Bird Flu in the country.

प्रो. महादेवराव शिवनकर (चिमूर) : महोदया,बर्ड-फ्लू के कारण देश में भारी पैमाने पर दहशत फैली हुई है। महाराट्र के नंदूरबार में पहला केस सामने आया है। वहां के पशु स्वास्थ्य मंत्री जी ने कहा कि देश में मल्टी-नेशनल कंपनी की वैक्सीन पहले प्रसिद्धि हुई। मैं सरकार का ध्यान इस ओर दिलाना चाहता हूं कि बर्ड-फ्लू के प्रचार-प्रसार के कारण पोल्ट्री-इंडस्ट्री को भारी नुकसान हुआ है। करीब 200 करोड़ रुपये का प्रति-दिन नुकसान हुआ है और करीब 12 हजार करोड़ रुपये का कर्जा पोल्ट्री फार्म्स पर है। जो मुर्गियों के खाने के लिए दाने का व्यवसाय करते हैं सोया वगैरह, उन पर भी 25 हजार करोड़ रुपये का कर्जा है। पूरा देश इस बर्ड-फ्लू से भयभीत हो गया है। केन्द्र सरकार ने विश्व-स्वास्थ्य-संगठन के नॉर्म्स को एक बाजू रखकर 400 करोड़ रुपये की वैक्सीन परचेज की। मेरा कहना है कि अगर वैक्सीन ही खरीदनी थी तो नॉर्म्स के आधार पर ही खरीदनी थी। उसके साथ-साथ 1600 करोड़ रुपये की वैक्सीन के ऑर्डर पैंडिंग हैं। इस मामले में देश के साथ बहुत बड़ा डयंत्र किया जा रहा है और देश का भारी नुकसान हो गया है। वैक्सीन का आयात हम करेंगे, इसलिए तीन-चार बातों के संबंध में केन्द्र सरकार से तत्काल खुलासा होना चाहिए कि सैम्पल कितने लिये गये और कहां से लिये गये, सैम्पल की रिपोर्ट नैगेटिव है या पॉजिटिव है और किस लैब की है? यह सब देश के लोगों को बताया जाए। महाराट्र सरकार ने एक बर्ड का 40 रुपया दिया लेकिन यह फिर जलगांव में फैला और मालावाड़ में 20 से ज्यादा मुर्गियां मर गयीं। मध्य प्रदेश में इनके आने पर बैन है और जम्मू-कश्मीर में बड्र्स नहीं जा सके । इस कारण इस व्यवसाय को कितना नुकसान हुआ है। सैम्पल्स के संबंध में सरकार खुलासा करे। उसके साथ-साथ 400 करोड़ रुपये की वैक्सीन मंगाई गयी है और 1600 करोड़ रुपये की वैक्सीन का आर्डर है। इस सारे प्रकरण की सीबीआई से जांच कराई जाए कि वैक्सीन की आवश्यकता थी या नहीं था? जितना इस उद्योग को नुकसान हुआ है उसकी भरपाई की जाए और जो कर्जा लोगों पर है उसका ब्याज माफ किया जाए और मूल रुपये की किश्तें की जाएं।अन्यथा इस देश में क्या होगा कि यह जो खेती के साथ लगा हुआ व्यवसाय है, वह पूरा खत्म हो जाएगा। इस देश में आज किसान और मजदूर संकट में हैं। ऐसी स्थिति में यह एक उद्योग उनके हाथ में था। छोटे-छोटे घरों में मुर्गियां पलती हैं, कहीं पचास, कहीं सौ, डेढ़ सौ, दो सौ या पांच सौ।

सभापति महोदया : बहुत ज्यादा इलेबोरेशन करने की आवश्यकता नहीं है, आपने अपनी बात कह दी है।

प्रो. महादेवराव शिवनकर : मैं आखिर मे एक बात कहना चाहता हूं कि इस उद्योग को संरक्षण और सुरक्षा देने से देश की सुरक्षा होगी, किसान की सुरक्षा होगी। साथ ही साथ मैं कहना चाहता हूं कि सीबीआई इसकी जांच करे और उसकी रिपोर्ट को सभागृह में रखा जाए। मेरी आपसे यही विनती है।